RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-02
February-2018

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

'संप्रेषण' पत्रिका में संस्मरण विधा'

उर्मिला कुमारी यादव

शोधार्थी, हिन्दी विभाग, राजस्थान विश्वविधालय, जयपुर।

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 28 February 2018

Keywords
समन्वय, परिष्कारण, उद्यतन, अस्तित्व, व्यष्टि, समष्टि,आत्मवक्तव्य, विस्तीर्ण, निश्छलता, समरसता, चौपाल, आक्रोश, पग, इण, सुस्ताणी, पुश्तैनी, समकालीनता, दस्तकारी, मार्क्सवादी, मुरीद, नज़म।

ABSTRACT

नवीन अद्यतन गद्य विधाओं में संस्मरण एक स्वतंत्र अस्तित्व है। संस्मरण के अन्तर्गत हमारी संवेदना को बीच भूमि मिलती है, अतीत एवं वर्तमान की क्रिया–प्रतिक्रिया का संतुलित समन्वय संस्मरण में देखने को मिलता है संस्मरण के दायरें पर विचार करें तो यह स्पष्ट होता है कि संस्मरण का विस्तार अधिक है। जहाँ विषय–वस्तु की बात है तो इस संदर्भ में संस्मरण की सफलता सबसे अधिक है। संस्मरण में लेखक अपने जीवन एवं आस–पास के वातावरण को रेखांकित करते हुए अपनी स्मृतियों का परिष्कारण करता है। संस्मरण में घटना के विशेषीकरण की प्रक्रिया महत्वपूर्ण होती है जिसमें एक काल–विशेष में घटित होने वाली घटनाओं को लेखनी के माध्यम से उकेरा जाता है। डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी के शब्दों में "संस्मरण व्यक्ति को गत्यात्मक रूप में प्रस्तुत करना चाहता हैं, व्यक्ति के अतिरिक्त बाह्य घटनाओं को भी महत्व देता है। इसलिए सामान्यतः संस्मरण का पात्र विशिष्ट घटनाओं को भी संभव करने वाला कोई महत्वपूर्ण व्यक्ति होगा।"[1]

शोध विस्तार– आधुनिक गद्य विधाओं में संस्मरण के महत्व को यह परिभाषा अप्रत्यक्ष रूप से स्थापित करती है। व्यक्ति एवं परिवेश समन्वय संस्मरण में प्रत्येक शब्दों में देखा जा सकता है। संस्मरण में स्पष्ट रूप से यह परिलक्षित होता है। घटनाओं की विशिष्ट संस्मरण में महत्वपूर्ण हो जाता है। जिसका सम्बन्ध व्यक्ति विशेष से होता है।

संस्मरण को लेकर कोश में लिखा द्वारा यह अर्थ भी कि 'स्मृति के आधार पर किसी विषय या व्यक्ति के सम्बन्ध में लिखित लेख या ग्रन्थ हमें इस पर के अभिघात्मक अर्थ तक ही पहुँचाता है। स्मृति के आधार परर किसी विषय या व्यक्ति के सम्बन्ध में लिखे गए संस्मरण होने के अतिरिक्त इस शब्द की अर्थात्मा को नहीं छू पाने। स्मृति आधारित लिखा गया कोई भी लेख यदि वह संस्मरण कार के मध्य संवेदना या राग विहीन है तो वह निर्जीव सूचनात्मक लेख मात्र ही हो सकता है, संस्मरण मात्र की बुनियादी शर्त है– तो 'स्वेदना' या 'राग' तो आवश्यक है ही किन्तु संस्मरणात्मक साहित्य जो कि स्मृति आधारित किसी तीसरे पात्र घटना था दृश्य से पाठक की साक्षात् कराता है तब वहाँ रागात्मक की पारदर्शिता तथा निर्मल भूमि एक आधारभूत अवमय है। संस्मरण के क्षेत्र पर विचार करने पर हम पाते है कि संस्मरण धरातल से प्रारम्भहोकर विशिष्ट क्षेत्र तक पहुँचता है। व्यक्ति की सामान्य प्रवृत्तियों में भी एक युग–निर्माता की वृत्ति को स्थापित करना संस्मरण की प्रसिद्धि है। महान विभूतियों के व्यक्तित्व से समाज का साक्षात्कार करना इस विधा का प्रतिफल न होना है। व्यक्ति तथा समाज के अन्तर्सम्बंधों को संस्मरण जैसी गयात्मक विधा में दिखाया जाता है तथा साधारण से घटनाक्रम को संवेदना के तीव्र स्तर पर रखकर परखा जाता है।

'संप्रेषण' पत्रिका में समय–समय पर 'संस्मरण' प्रकाशित होते रहे हैं जो कई रूपों में पाठक के लिए ज्ञानवर्धक होने के साथ–साथ सुरूचिपूर्ण भी है।[2]

'संप्रेषण' पत्रिका के अंक–160 में संस्मरण के अनेक अंक प्रकाशित हुए हैं जिनमें–उदयप्रताप सिंह कृत 'मुक्तिबोधः व्यष्टि का समष्टि में विलय', डॉ. परशुराम बिरही कृत 'मुक्तिबोध के स्मरण का अर्थ', शरद जोशी कृत, तुम छले गये मुक्तिबोध' प्रकाशित हुए। उदयप्रताप सिंह ने 'मुक्तिबोध : व्यष्टि का समष्टि में विलय शीर्षक में बताते हैं हिक मुक्तिबोध रचना तथा आलोचना द्वारा बहुत दूर तक प्रभाव उत्पन्न करने वाले एक शीर्षस्थ साहित्यकार हैं। 'तारसप्तक' (1943 ई.) में मुक्तिबोध ने उनका 'आत्मवक्तव्य' उनकी मालवा की शस्यश्यामला उर्वर भूमि तथा प्रकृति सुषमा के प्रति प्रेम को व्यक्त करता है, "मालवे में विस्तीर्ण मनोहर मैदानों में घूमती हुई क्षिप्रा की रक्त्भव्य साँझे और विविध रूप वृक्षों की छायाएँ मेरे किशोर कवि की आद्य सौन्दर्य प्रेरणाएँ थी। उज्जैन नगर के बाहर का यह विस्तीर्ण निसर्ग लोक उस व्यक्ति के लिए जिसकी मनोरचना में रंगीन आवेग ही प्राथमिक है, अत्यन्त आत्मीय था। मैंने सौन्दर्य लोक को ही अपना क्षेत्र चुना। मेरे बालमन की पहली भूख सौन्दर्य और दूसरी विश्व मानव का सुख–दुख इन दोनों का संघर्ष मेरे साहित्यिक जीवन की पहली उलझन थी मुक्तिबोध की कविताओं का नायक वह आत्मनिर्वासित व्यक्ति है जिसने सरल रास्तों को छोड़कर कठिन मार्ग चुना है इसलिए उनकी कविता की केन्द्रीयता

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

संघर्ष तथा साहस के इर्द–गिर्द बनी रहती है। कई आलोचक एवं स्वयं मुक्तिबोध अपनी सर्जना को 'भयानक खबर' तक कह जाते है। इतिहास के जटिल प्रश्नों को कविता में बदल देना उनके कविकर्म का कौशल है। इस सम्बन्ध में श्रीकान्त वर्मा लिखते हैः "मुक्तिबोध की सार्थकता इसमें है कि उन्होंने इतिहास के प्रश्नों को केवल इतिहास के प्रश्न मानकर छोड़ नहीं दिया है, बल्कि उन्हें कविता के प्रश्नों में बदल दिया है।"[3]

मुक्तिबोध में सृजनात्मक क्षमता उद्‌भूत थी। सामाजिक विषमताओं, रूढ़ियों तथा शोषण के खिलाफ वह निरन्तर सक्रियशील रहते थे। मुक्तिबोध ने अपनी कविताओं में मानवता का आह्‌वान किया,वे अपनी कविताओं के माध्यम से अतीत में खो चुके व्यक्ति की तलाश करते है। इनकी कविताओं में ग्रामीण समाज का चित्रण है तथा ग्रामीणजन को वे आत्मीयता, निश्छलता तथा समरसता से भरे मन के रूप में देखते हैं–

"तुम्हारे पास, हमारे पास,
सिर्फएक चीज है,
ईमान का डण्डा है,
'बुद्धि का बल्लम है,
अभय की गैंती है,
हृदय की तगड़ी–तसला है
नये–नये बनाने के लिए भवन
आत्मा के मनुष्य है

इसी प्रकार संप्रेषण के अंक–164 में कई संस्मरण प्रकाशित हुए जिनमें वृन्दावन लाल वर्मा, डॉ. रामदरश मिश्र।

वृन्दावन लाल कृत, 'भरतपुर यात्रा का एक संस्मरण' डॉ. रामदरश मिश्र कृत 'मेरी माँः ऊर्जा का संगीत', सुधीर विधार्थी कृत उनके पैरों में गति और कंठ में संगीत था', प्रकाश मन कृत, 'खुद में खोया हुआ–सा एक भोला बच्चा और माँ की याद', डॉ. मंजीत चतुर्वेदी कृत 'तड़ित की तरह कौंधता स्मृति' सूरेश्वर त्रिपाठी कृत ' माँ, कहां हो तुम!', दुर्गाप्रसाद श्रेष्ठ 'मेरे पिताजीः 'उदय' संपादक', योगेन्द्र नारायण 'तलाश जारी है', रामकुमार कृषक–कृत 'कहीं न कहीं हारकर ही', प्रभु झिंगरन कृत 'शून्य और यंद यादें', सुधेन्दु पटेल कृत 'नदी सरीखा कविः भवानी प्रसाद मिश्र', आचार्य शक्ति त्रिवेदी कृत 'वे दिन वे यादें', राधेश्याम तिवारी कृत, 'मेरे में संग्रहालय में सुरक्षित है बीपी कोईराला, डॉ.सुनीता कृत 'वे ज्ञान से दीप्त आँखें; विनोद भारद्वाज कृत 'कि शहर का कोई हिस्सा चला गया. . ., चंद्रभानु भारक्षज कृत, 'अज्ञेय के साथ कुछ क्षण, 'डॉ. सत्यनारायण कृत 'कभी जिला के कभी मार के कहाँ गये आर. के.', डॉ. हेतु भारद्वाज कृत 'साहित्यिक संस्कारों का उन्मेष', रामानन्दराठी कृत 'एक सूफी संजीव',मदन प्रकाश कृत 'असाध्य वीणा प्रसासरण में असाध्य रही', वेद व्यास कृत ' एक जिन्दा दिल इंसान', जगमोहन लाल माथुर कृत 'पत्रकारिता के वे दिनः वे पचास वर्ष', परवीन कुमार 'रमा' कृत 'नीरमरी मैं हूँ! दुखों की बदली', विश्वनाथ सिंघानिया कृत 'यादों के झरोके से– मुक्तिबोध स्मारक' सवाई सिंह शेखावत कृत 'कवि के घर चोरी' आदि संस्मरण प्रकाशित किए गए है।

'संप्रेषण' का यह अंक संस्मरण अंक के रूप में प्रकाशित हुआ है चन्द्रभानु भारद्वक्षज जी ने संपादकीय में इस अंक के बारे में लिखा है, "दरअसल संस्मरण कोई नयी सोच नहीं है। यह सोच हमारे अतीत के 'लोक' से जुड़ी है जो जीवन से उठकर निरन्तर विकसित होता गया। मुझे याद है मेरे घर के बचपन में जाड़े के दिनों में चूल्हें पर बैठे हुए फौजी चाचा से दूसरे विश्वयुद्ध की स्मृतियाँ बड़ी सलीके से सुनी थीं। वे तब वर्तानिया की फौज में एक अन्तरराष्ट्रीय युद्ध लड़ रहे थे या हमारे गाँव की चौपाल पर बैठे वे हमारे पूर्वज भी अपने बीते अतीत को बड़े चाव से सुनाते–सुनाते गम्भीर हो जाया करते थे।"[4]

इसी अंक में डॉ. रामदरश मिश्र का संस्मरण 'मेरी माँः ऊर्जा का संगीत' संवेदनाओं का श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत करता है। इसमें मिश्र जी ने अपनी माँ की संवेदनाओं को व्यक्त करते हुए लिखा है, "कभी–कभी सोचता हूँ कि मेरे भीतर यह दर्द क्यों आ गया, कहाँ से आ गया? आज भी जब बेटी की विदाई के गीत सुनता हूँ तो मेरे आँसू फट चलते हैं। अपने बेटों की शादी में बहुओं की विदाई ने मुझे बहुत उद्विग्न किया है। बेटी का बाप तो प्रकृतिस्थ है और मैं छिप कर रो रहा हूँ। लगता है माँ की करूणा ही मेरे भीतर चुपके से सरक आई है।"[5]

मिश्र जी ने अपनी माता को बचपन से देखा था वे अपनी माँ के साथ होता व्यवहार सदैव देखते आए थे उनकी माँ की सबसे बड़ी बात यह थी कि वह श्रम के साथ संगीत को भी थामें रहती थी। मिश्र जी ने कभी भी अपनी माँ को जीवन से हारते, हताशा व निराशा से भरे कभी नहीं देखा था अभावमय स्थितियों में भी वह एकशक्ति की तरह थी और अपने बच्चों की शेरनी की तरह उनकी ऊर्जा की रक्षा करती थी। इस संस्करण के अन्त में जो पंक्तियाँ लिखी हैं जो सहृदय की आँखें आँसूओं से लबलबाने में कोई कमी नहीं छोड़ती, मिश्र जी कहते हैं, "अंतिम समय में मैं माँ को देख नहीं पाया (पिता को भी नहीं) यह दुःख मुझे आज तक सालता है। लेकिन नौकरी की निमति भी तो यही है। रह–रहकर वह मेरे सपनों में आती है और पूछती है 'कैसे रहे, बाल–बच्चे कैसे हैं?' और मैं पूछता हूँ 'तुम कैसी हो माँ?' और सपना टूट जाता है।"[6] मिश्र जी का यह संस्मरण अपनी माता की संवेदनाओं को पाठक के समक्ष साक्षात् करता हुआ प्रतीत होता है।

संप्रेषण अंक–153 में यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' कृत 'भीतरी आक्रोश' संस्मरण प्रकाशित हुआ जो कि इनकी राजस्थानी कहानी से उद्‌घृत है इस संस्मरण की भाषा में राजस्थानी शब्दों का भी प्रयोग किया गया है। शर्मा जी द्वारा नवविवाहिता बिज्जी तथा लालिया की संवेदनाओं का चित्रण करते हुए लिखा है, "बिज्जी और लालिया रेतीले रास्ते से जा रहे थे।

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

रेत तावड़े (धूप) से तप रही थी। लालिया के पाँवों में कोई पुरानी पगरक्खी थी पर बिज्जी के पाँवों की चप्पल फटी हुई थी। एक की तो एड़ी ही गायब थी। अंगूठे वाले पट्टे किसी रस्सी से बंधे हुए थे। वह रूक–रूक कर सीं. . . . . सीं. . . . . कर लेती थी।"[7]

इसमें शर्मा जी ने बिज्जी और लालिया की आर्थिक स्थिति के साथ–साथ उनकी मानवीय संवेदनाओं को भी व्यक्त किया है। राजस्थानी शब्दावली का प्रयोग करते हुए शर्मा जी लिखते हैं, "पग इण तरिया वलै है जाणेंकिसी ने पगां हेरे खीरा बिछा दिया है। थोड़ी सुस्ताणी चायूं। आबरी छाया भी है?"[8]

इसके अतिरिक्त इस संस्मरण में राजनीतिक भ्रष्टता को भी व्यक्त किया गया है। लालिया का गौणा हुए अभी एक वर्ष भर ही हुआ था। बिज्जी जैसी लुगाई पाकर वह निहाल ही हो गया था वह अनुभव करने लगा था मानों उसके धूल भरे जीवन में एक नहीं छोटे–मोटे कई तालाब खुद गये हों। लालिया का पुश्तैनी धंधा था मृत जानवरों को उठाना इसी धंधे से उनकी सात पुश्तों का पेट भर रहा था परन्तु खद्दरधारियों ने इसमें भी राजनीति के दाव–पेंच दे डाले। सरकार द्वारा सांसद के भान्जे को इस काम का ठेका दे दिया। कहें कि भ्रष्ट राजनीति के चालबाजों यह धंधा भी अपनी कमाई के लिए हथिया लिया।

'संप्रेषण' के अंक–163–164 में आस्था सिंह के 'पहाड़ नहीं डरते हैं उम्र केढलान पर' शीर्षक संस्मरण में विष्णु चन्द्र शर्मा से युग कवि आस्था सिंह की बातचीत प्रकाशित की गई है जो 24 जून 2015 को विष्णु चंद्र जी के वाराणसी आवास स्थान पर की गई थी। इसमें आस्था सिंह द्वारा विष्णु जी के समकालीन कवि विष्णु जी को कैसे लगते है पूछने पर वे कहते हैं, "समकालीनता एक सीधी रेखा नहीं है बल्कि वह 'गंगा की तरह कई मोड़ लेकर जाती है। गंगोत्री से बंगाल तक सभ्यताओं को समेटते हुए कई मोड़ लेती नज़र आती है। मेरी समकालीनता में एक बहुत बड़ी ताकत मार्क्सवादी संघर्ष की थी। 'झीनी–झीनी बीनी चदरिया' लिखने वाले को पता नहीं है कि उन कारीगरों को शिक्षित किया था कबीर के शिष्यों ने अक्षर ज्ञान से लेकर पैरों तक उस परम्परा का भी हिस्सा है और संघर्ष का भी। इस परम्परा के सरयू पांडेय थे। मरनपुरा से पीली कोठी तक एक भी परिवार नहीं होगा जिन्हें सरयू पांडेय से रूस्तम की कहानी नहीं मालूम होगी। दुख और पीड़ा समकालीनता का एक हिस्सा है। रूस्तम करधा उद्योग के लिए कुछ नहीं कर पाए। पूरा करघा उद्योग इस समय निराशा की स्थिति में है। इस बात को विजेन्द्र नहीं समझेंगें पर कबीर समझेंगें, दस्तकारी के कवि हैं। इसीलिए कबीर और त्रिलोचन मेरे समकालीन कवि हैं। समकालीन कवि कौन होता हैं। बनारस में रैदास भी रहते थे। रैदास मंदिर तो जगजीवन राम ने बना दिया है पर चेतना को समझने की शक्ति नहीं है। ऐसे ही आज के नेता अनपढ़ है।"[9] इसके अतिरिक्त अनेक प्रश्नों का उत्तर इस संस्मरण में दिया गया है।

'संपेषण' पत्रिका के अंक–171–172 में रजनी राघव के संस्मरण 'ख़याल' की शायरी पढ़ते हुए प्रकाशित किया गया। 'ख्याल' साहब पर यह अंक केन्द्रित है। 'ख्याल' जी का व्यक्तित्व तथा कृतित्व इस अंक की अमूल्य निधि है,ये बहुत बड़े शायर हैं, उन्होंने उर्दू अदब की शानदार परम्परा गज़ल को अपनी मज़लों के माध्यम से विकसित कर एक नयी दृष्टि दी है। उन्होंने गज़ल की बारीकियों और विचारों को पिरोते हुए जो गज़लें और स्वतंत्र नज़्में हिन्दी संसार को दी है, वे प्रशंसनीय हैं। रजनी राघव ख्याल साहब की मुरीद सन् 1992 में उनकी पुस्तक 'रात गये' पढकर हुई है। लेखिका ने 'ख्याल' साहब को फेसबुक पर ढूँढ लिया और रजनी जी का 25 साल का इंतज़ार तब खत्म हुआ जब उन्हें पता चला कि वे उन्हीं के शहर में है। लेखिका लिखती हैं कि, "इतने महान व्यक्तित्व के धनी इतने मशहूर शायर इतनी सादगी से मिले, कि उस पल मुझे वह कहावत याद रही कि, "फलदार वृक्ष हमेशा झुके रहते हैं।" मैंने अपने बेटे का नाम उन्हीं केनाम पर रखा हुआ है और अंत में– "थोड़ी दूर और मेरा बोझ उठा फिर तो ले जायेगी हवा मुझको" सारे शब्दों में इतनी गहरी बात कहने का हुनर 'ख़याल' साहब के अलावा और कहाँ मिल पायेगा।"[10]

निष्कर्षः–

'संस्मरण' गद्य की ऐसी विधा है जिसमें व्यक्ति तथा समाज के अंतरसम्बंधों को दिखाया जाता है संस्मरण विचारों को धरातल से प्रारम्भ कर विशिष्ट स्तर तक पहुँचाने का कार्य करते हैं। 'संप्रेषण' पत्रिका ने'संस्मरण' विधा को पाठकों के लिए रूचिकर बनाया है, ऐसी विधाओं का समावेश पत्रिकाओं में करना श्रेयस्कर भी है क्योंकि इससे पाठकों का आकर्षण तो बढता ही है साथ ही साथ पाठकों को साहित्य के प्रति आकृष्ट भी करता है जिससे युवा पीढ़ी को साहित्य को जानने तथा समझने का स्वर्णिम अवसर प्राप्त होता है।

संदर्भ सूचीः–

1. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास : डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी , पृष्ठ–164
2. संप्रेषण, अंक–160, पृष्ठ–11
3. वही।
4. संप्रेषण, अंक–161, पृष्ठ–7
5. वही, पृष्ठ–11
6. वही, पृष्ठ–16
7. संप्रेषण, अंक–153, पृष्ठ–66
8. वही।
9. संप्रेषण, अंक–163–164, पृष्ठ–77
10. संप्रेषण, अंक–171–172, पृष्ठ–82

© RRIJM 2015, All Rights Reserved